INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra.	Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl	Mr. Satish Funne	136
33	Problems of Rural Migration in India	Mr. B. S. Jogdand	140
34	White Collar Crime in India	Mr. Bandu Patekar	143
35	Poverty in India	Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India	Prof. Dattatraya Mundhe	150
37	An Approach towards Social Security	R. J. Gaikwad	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation	Ravindra Kharat	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries	Shaikh Jahara Abdul Rahim	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India	Mr. Vaibhav Shendage	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice	Shesherao Rathod	166
42	Poverty in An Unorganised Sector	Dr. Sonal Ubale	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India	Subhash Pole	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection	Uday Kharat	176
	हिंदी विभाग		
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या	डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या	दीपक डोंगरे	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही	प्रा. दीसी होळकर	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे	डॉ. शशि बाला भट्ट	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष)	डॉ. अरविंद घोडके	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम	डॉ. जे.एस.धायगुडे	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या	डॉ. संगीता आहेर	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	डॉ. सय्यद शौकत अली	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद	डॉ. रजनी शिखरे	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)	डॉ. ललिता राठोड	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य	डॉ. रजनी शिखरे	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ	डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले	225
57	भारत में भ्रष्टाचार की समस्या	डॉ. आर.के. देशमुख	229
58	भ्रष्टाचार	महादेव करडे	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव	किरण पवार, कविता जोशी	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या	डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल	संतोष नागरे	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में)	डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या	डॉ. रमेश व्ही.मोरे	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि	ऋचा राय	257

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्यायें
(मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)

डॉ.ललिता राठोड,
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निदेशक
बलभीम महाविद्यालय, बीड.

भारतीय साहित्य में `भारत` और `साहित्य` दो शब्द है। जिससे अर्थ प्रतित होता है कि, `भारत का साहित्य`। भारत का साहित्य वह है जो भारत के जन-मानस का साहित्य है, जहाँ समुचा भारत सम्मिलीत हो, परंतु भारत में लिपी ज्ञान का अधिकार क्षेत्र आरक्षित था। फलत: भारत के वैदिक साहित्य से हम संपुर्ण भारतीय जन का प्रतिबिंब, उनकी समस्याओं का वर्णन अगोचर है। लिपी ज्ञान सभी के लिए मुक्त होते ही हमारे भारतीय साहित्य में अंर्तविरोधों की स्थिति दिखाई देती है और यही साहित्य सही अर्थ में भारतीय समाज की समस्याओं को प्रतिबिंबित करने के लिए सफल रहा है। तब तक यह साहित्य `स्वान्त सुखाय`, धार्मिक प्रचार-प्रसार, पांडित्य प्रदर्शन से आगे उठ नहीं सका । यहाँ काल की सीमा से परे जाकर सोचना होगा। क्योंकि एक ही समय में दो विरोधी विचारधाराओं से प्रभावित साहित्य रचा गया, कहीं व्यक्ति विशेष का महत्व है, तो कही समाज विशेष का महत्व। नगेंद्र के अनुसार,``भारतीय साहित्य एक इकाई है, उसका समेकित अस्तित्व है, जो भारतीय जीवन की अनेकता में अंतर्व्याप्त एकता को अभिव्यक्त करता है। यह लक्षण प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्यों के वैशिष्ट्य का निषेध नहीं करता, वरन् उसके महत्व को पूर्णत: स्वीकार करता हुआ, उनकी विविध प्रवृत्तियों में निहित सामान्य तत्त्वों के आधार पर समेकित भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति का नाम `भारतीय साहित्य` है; और भारतीय मनीषा का अर्थ है भारत के प्रबुद्ध मानस की सामूहिक चेतना कलेक्टिव कान्शसनेस सहस्राब्दियों से संचित अनुभूतियों और विचारों के नवनीत से जिसका निर्माण हुआ है। यह भारतीय मनीषा की भारतीय संस्कृति, भारत की राष्ट्रीयता और भारतीय साहित्य का प्राण-तत्त्व है।`` इस तरह भारतीय साहित्य एकता को अभिव्यक्त करता है, फिर भी उनमें उन समस्याओं का भी अंकन है, जो साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होता रहा है।

भारतीय साहित्य के इतिहास के विषय में डॉ.आशा गुप्ता कहती है कि, ``भारतीय साहित्य का इतिहास लगभग ३००० वर्ष के मानसिक क्रियाकलाप का लिपिबद्ध इतिहास माना जा सकता है। यह अत्यंत जटिल, व्यापक और निरंतर गतिशील रहा है। इसका अनंत विस्तार इसे निरंतर गतिशील रहा है। इसका अनंत विस्तार इसे दुरुह बना देता है तथा बड़े से बड़ा इतिहासकार भी दिग्भ्रांत हो सकता है।`` इस प्रकार भारतीय साहित्य के इतिहास को देखना है तो पूरे ३००० वर्ष तक के इतिहास को देखना होगा। भारतीय साहित्य का फलक विस्तृत है, फिर भी उसमें सामाजिक समस्याओं का अंकन नहीं है। प्राचीन एवं वैदिक साहित्य धर्म, शास्त्र, ज्ञान, दर्शन आदि के परिधि में चलता है, उसके आगे न जा सका। हाँ, भगवान बुद्ध के उपदेश तथा जातक कथाओं में उपदेशों तथा विद्रोह की वाणी रही है। जो प्रखरता से मध्यकालीन संत, कवियों के साहित्य से अभिव्यक्त होती रही है। फिर भी `ईश्वर आराधना` तत्कालिन समय की समस्या थी, जो निश्चित समुदाय के लिए प्राप्त थी। इसलिए धर्मगत कठोरता पर आघात करते हुए सामाजिक समता का परचम फैलाने की कोशिश हुई। यह परिवर्तन की मांग भी उस समय में विद्रोह था, तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के खिलाफ।

हिंदी साहित्य का मध्यकाल स्वर्णकाल है, भक्ति के साथ सामाजिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य इसमें देखा जा सकता है। ईश्वर की आराधना के लिए किसी और साधन की जरुरत नहीं, बल्कि केवल मन में `भक्तिभाव` का होना जरुरी है। ईश्वर आराधना के द्वार सभी के लिए खोले गये। भक्ति से ही ईश्वर को पा सकते हैं, यही विचार बहुजनों को ढाँढस देती है, और फिर शुरु होता है एक आंदोलन। जो समुचे काल को भक्तिमय बना देता है। भक्ति के ओट में समता